॥ श्रीः ॥

अमरसिंघ हाडी राणीको ख्याल.

उजीर तेलीकृत

इसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीने

अपने

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९५५, शकें १८२०.

कल्याण-मुंबई.

१. भर्तृहरि-निर्वेद नाटक — बच्चनेश मिश्र
२. रसराज — मतिराम
३. स्वदेश की जय — गंगाप्रसाद गुप्त
४. देशी राज्य — ”
५. अमरसिंह राणी हाड़ी को ख्याल — उजीर तेली

उजीर तेली

1898

Re. 1.00
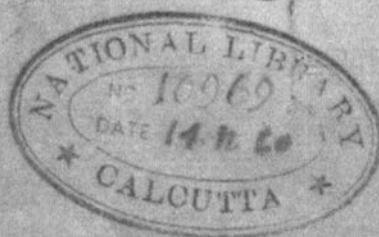
॥ श्रीः ॥

अमरसिंघहाडीको ख्याल।

श्रीगणेशाय नमः ॥ टेर ॥ आये नकीब तखत दिल्लीपतस्या ज्यानी बदस्यायके ॥ दोहा—दादा आदम आद मनादी मंगलामुखी गनेस ॥ दध अक्षरकू टालियो समाई शुभगुण देवो हमेश ॥ सिष्टपती करतार मनाऊं कर हिरदेपर बेसजी ॥ म्हेस्या० ॥ १ ॥ सिंघ चढी सिर छत्र बिराजे मस्तक बिंदालाल ॥ गोविंदराम गुरुदेव करो बालक सिरपर प्रतिपाल ॥ तेली चतुर उजीर बुणाया अमरसिंघका ख्याल जी ॥ म्हेस्याज्या० ॥ २ ॥ हुंकम दियो है बदस्या मुजकूं करूं कचेडी ताजा ॥ मैन कीब बदस्याके आगे नहीं औरका साजा ॥ प्रथम सलामी जैपुरवाला करी मानसिंगराजाजी ॥ म्हेस्याज्या० ॥ ३ ॥ बदस्याहूके करण सलामी आवे सतरखान ॥ लखनेऊका नबाव आया सेरखान पठान ॥ छूट भैयाकी गीणती नांई साज्यांके दरम्यानजी ॥ म्हेस्याज्या० ॥ ॥ ४ ॥ सलाबत बदस्याको सालो बडी हुरमको भाई ॥ बाईसी काबील है उसके पैदल सबी सी-

पाई ॥ हजरतकी मरजीसैं करता सल्लावत बदस्या-ईजी ॥ झेस्या० ॥ ५ ॥ गोडाटीसें चालकै सयो आयो अरजुनगोड ॥ भाई बेटा सबही आया और सगाकी जोड ॥ मारवाडसें आयो अमरसिंघ छत्र-पती राठोडजी ॥ झेस्याज्या० ॥ ६ ॥ कवित्त अमरसिंघको ॥ शारदा समाग करूं तोकुं मैं मनाक मैया देवो बुद वाक वानी सची तुं जुवाला है ॥ सिंघनपर चढी सीस सुवरनका छत्र सजै हरिय-लसा चोला गलै रुंडनकी माला है॥ मस्तकपैं तिलक सजै भवनहूंप धजा सजै कोटवाल साज रहा भैरव मत-वाला है ॥ शंकरमनमानी रानि तिहुं लोक जानीतोकुं साह करो मेरी तेरी जोतका उजाला है॥ १॥टेर॥आये हम राजकुली राठोड ॥अमरसिंघ सुर धरा सिर मो-ड॥दोहा–प्रथमै मनाऊं गनपत शुभ करै गौरीपतिको लाल ॥ तोये रटुं जुवालामुखसे माई कर मेरी प्रति-पाल ॥ गोविंदरामकी किरपासेती कथ उजीरो ख्या-ल ॥ आये० ॥ २ ॥ मारवाडका मैं हूं राजा जानै सकल जिहान ॥ भ्रात हमारा पिरथीसिंजी चतुर सुघर सुरग्यान ॥ गजसिंगजीका पुत्र छास म्हारा नाव अमरसिंघ जान ॥ आये० ॥ ३ ॥ सजनातणा सहायक म्हे छां शत्रूका उर साल ॥ चोजारकुं मार

करान्हे रैयतकी प्रतिपाल ॥ म्हे राठोड महाबलकारी दिल्लीतखतकी ढाल ॥आये० ॥४॥ सतरखान उमराव हमार येक न लागै जोड ॥ म्हे मुरधारमा नवी सजी राखा घणी मरोड ॥ राजलियो कन्नोजको नांसै कीला तोड ॥ आये० ॥५॥म्हार पूठ सगा छ भारी कछवा ओर चुहाण ॥ चापाकू पामेड तास ओर मोड सगा परवाण॥ हाडा खिंची देवडास नही दे दुसमननै जाण ॥ आये ० ॥६॥ स्याजानी बदस्याक म्हारो लाखटका रुजगार ॥ बदस्यातण हुकुम मै म्हे सब हाजर रहां तैयार ॥ भीड पड हजरतमै जद म्हे देवां मदत्त अपार ॥ आये० ॥ ७ ॥ आम खास बदस्याक हाजिर सभ रजवाडा आग ॥ सल्लाबत बदस्याको पालो मेरे ऊपर लाग ॥ दाव लग्या दुसमनकुं मारुं एक हाथक साग ॥ आये० ॥ ८ ॥ कवित्त–अचल बिसमला अलावा अली है मदतगार चारबार मेरे तो सहायक सिरताज है ॥ येही निसानी इनसान मुसल्मीनहकी बखसावै दरगामे नेकी वो नवाज है ॥ बंदगीके करनेसें राजी है खुदा पाक दुनियांकी बात वाहीयात सबही साज है ॥ दाता हो ह्मेरबान देता है खान पान चढी थी कबान जबसै मुल्कुमें राज है ॥ ॥ १ ॥कवित्त–हजरत मैं अरज करूं तुमसेती बाद-

ख्याह अरजीका मरजीह क्या सो तो थे सुनावो जी ॥
चत्रसाल हाडकी पोलपैं विवाह मड्यो बुंदीकुं बुलाया
झान सीखथे दिवावो जी॥ राजा खुस होय टीको भे-
ज दीयो झार पास साड सुदी नोमीको नीकट कीयो
सावो जी॥दीलीपतसेर सीख देवो खुश होय मोपै वर२
कहूं देर काहेकुं लगावो जी॥२॥टेर ॥ हजरत अरज
करा छां था न अब ये सीख दिवावो झान॥दोहा–अर-
ज करा साजान बादस्या जलदी सीखदिवावो ॥ साड
सूदी नोमिको झार निकट आ गयो सावो ॥ क्या है
मरजी आपकी सजी सो हमकुं फरमावो ॥ सो हमकुं
फरमावो लावो मत बार जी ॥ झान टीको भेज बुला-
या हाडीनारजी ॥ हजर० ॥ १ ॥ टेर ॥ अमरसिंघ स-
झावतपां जावो घासी सीखा मुसाहेब ठावो ॥ दोहा–
सुबेदार सझावत म्हारी बडी हुरमको भाई ॥ बाई-
सी काबील है उसके पैदल सभी सिपाई ॥ राजा
ओर नबाब सबीकी करता वोही सुनाई ॥ करता
वोही सुनाई अलककासीलह ॥ बदस्याईमें उसका
हुकम तामील है ॥ अमर० ॥ २ ॥ तातो हुयो
फिर सलाबंत मेरे उसके तीख॥ मै राजा नागोरकास-
क्या मुजकुं उसकी पीक ॥ मेरा घटै कायदा उसपां
मांगण जाऊं सीख ॥ मागण जाऊं सीखे तुरत पा

चालकै ॥ वो अबे अबे बोल नहीं सम्बालकै ॥ हजर० ॥ ३ ॥ कोतो सीख दिवाये द्या तुमकुं किते दीनूंका लीणा ॥ सची सची जबान बोलो झूठी नाई कहना ॥ ज्यो दिन लगै सीखसू ज्यादा दंड पडैगा सैणा ॥ दंड भरसी जो टेम चूक हो ज्यायसी ॥ फिर बिना जरीबानै नहीं आंण पायसी ॥ अमर० ॥ ॥ ४ ॥ पाया हुकम सीख मोये अपसर एक मासकी द्यावो ॥ म्हेरवानगी राखो ये ज्ञान खीजकर मत बसलावो ॥ परणा हाडी नारन सह्मार चितपर घणुं उमावो॥ चितपर घणु उमावो हाडी व्याहस्युं ॥ थे करस्यो जद याद पास थार पायस्युं ॥ हजर० ॥ ५ ॥ पावो पास बखत पर तोथे अमरसिंघ अब जावो ॥ परणो नार हुकम हम कर दियो मत मनम पिसतावो ॥ ये डोल बूंदीका हसो अमरसिंघ ये व्यावो ॥ अमरसिंघ ये व्यावो चीत रख बातकी ॥ झे अमरसिंघ न सीख दई दिन. सातकी ॥ अमर० ॥ ॥६॥सीख दई दिन सातकी सह्मे कछी तुरंग कसाया ॥ अणी बणीका मरद संग लेकर जलदी चढ घ्याया ॥ रात दीनका करा पयाणा बुंदी गडन आया ॥ बुंदी गडन आया सींघ राठोडजी ॥ पण तुरकाकी लग लागी लाख कीरोडजी ॥ ह० ॥ ७ ॥ अमरसिं-

घको दासीसे कवित्त–येरी रंगीली नसीली छबीली नार कुनसनी परपतकतु दुवार पाटरानी है ॥ करे तुम रोर जोर जोबनके सेती नार गत ज्युं गयेंद तेरी चाल डिगमगानी है ॥ कह सास ख्वारी बोली दो राणी मारी जैसे कसे पिया प्यारी तुं हो रही दिवा-नी है ॥ खोलक सुनावो सारी दहसत मत खावो प्यारी जरा निकट आवो री तु मेरे मनमानी है॥ १ ॥ कवित्त–दासीको अमरसिंघसें ॥ थार मनमारि सोम-वार ता सुनाऊ राव चलके रनवास्युं मैं पास थार आई जी ॥ चित्त मछो चाव था स्युं मिलवाको राव ह्मार करकरके हेत हाडी बाईजी सीनाईजी॥हाडांका सवाऱ्या कांम बादस्याकी कचेडी बीच उसही गुणसेती थान व्यावगो बाईजी ॥ डुलही बहाडी नार दुलहा राठोड आप दासी मती हारी डेरा निरखणकुं आईजी ॥ २ ॥ टेर दासीकी ॥ ये तूं चात्रग नारी प्यारी रंग भीनी कीन घरगोरडी ॥ दोहा–चात्रग नार छबीली है तूं किस राजा घर बाल ॥ चलत चाल गजराजज्यूं सतेरी सुंदर अदाबी साल ॥ आई कुन काम किन भेजी मोये साचा कहो हवाल॥ येजी प्यारीके तेर पीवसे जामें नहीं तो रमाई ॥ ये मदभीनी ये नार प्रीतम नहीं रमाई ॥ नार केरतसी-

ह दुखदाई हकीगत कह द्यो सारी ॥ प्यारी०
॥ १ ॥ टेर दासीकी ॥ थारा डेरा निरखण आई
वो मै अमरसिंघ राठोडजी ॥ दोहा—चत्रसाल बुंदीरा
हाडा छै ह्मारा सिरमोड ॥ तोरणपर भेला हुवा सजी
सब भायांरी जोड ॥ मोये भेजी थारा डेरा निरखण
अमरसिंघराठोड ॥ येजी म्हांन बाईजी पीनाई थारा
डेरा निरखण आई जी राठोडा राव ॥ डेरा निरखण
आया थे म्हारी बाईक मन भाया॥चलो क्युं बार लगाई
॥ आई० ॥ २ ॥ बार लगायो मत ना अब थे जलदी
जावो प्यारी ॥ फेरा द्यावो राणी न ले ज्यावो म्हारी
तो कटारी ॥ म्हे चाल्या रणवासमै सबी लमाले सा-
स डसारी ॥ येजी म्हान सीखबादस्या सात दिनाकी
द्याई ॥ ये मदभीनी ये नार सीखसांकडी द्याई ॥
नार ह्मारो खोबुणसी नाई ॥ करो थे फेराकी त्यारी
॥ प्यारी ० ॥ ३ ॥ ह्मेतो त्यारी कीनी थे रजपूती
हठ मत धारो ॥ थे चाले बीन चूरी नीच लाज सा-
थ हमारो ॥ बींद बिना फेराकी सास थे हिरद अक-
ल विचारो ॥ ये जी थां न येक रातसै ज्यादा नहीं
बिलमावाजी॥ ह्माराही दवा सूरज ॥ ज्यादा नहीं बि-
लमावां ॥ सीख थांन दिन उगंत द्याव॥ फेर थे क-
रो चढाई जी ॥ आई० ॥ ४ ॥ ह्मांन सीख दिराय

चढा वीछ थार इकतार ॥ छत्रीकै सस्तर बडा स-
क्युं दासी हुई गवार ॥ षाट्यो षावां तेगकी सह्ले
राठोडां सिरदार॥ येजी थे तो जलदी जावो मत ना
बार लगावो जी ॥ दासी रतनकुवार ॥ मत ना
बार लगावो ॥ थे राणीनै फेरा द्यावो ॥ ह्लारी ले
ज्या ये कटारी ॥ प्यारी०॥ ५ ॥ दई कटारी अमर-
सिंघमें बाईजीपा ल्याया ॥ च्यार वेदका पढ्या हुया
पंडत परवीन बुलाया॥ अमरसिंघ छत्रीकी काटरी
साग फेरा द्याया ॥ येजी ह्लेतो फेरा द्याकर दोलत
भोत दिवाई जी ॥ बाई न आज दोलत
भोत दिवाई दे जदे म्यानैम बैठाई ॥ पास
प्रीतंमक खिनाई ॥ आई० ॥ ६ ॥ षासा सगा मिल्या
ह्लांन हडा भोत करी प्रतिपाल ॥ दे जदा जो
दियो घणेरो ओर लखुंदा माल ॥ हाडी रानी व्या-
कर आयो अमरसिंघ भोपाल ॥ यजी म्हे तो
तखत नांगो रतन अब आया जी बुंदीसे चाल ॥
आया आपण देस ॥ व्यायकर अमरसिंघ नरेस ॥
वात होई पेस हमारी ॥ प्यारी० ॥ ७ ॥ बादस्याकी
सलाबतसें टेर॥आज ह्लार कुण कुण मुजर आया जी॥
ह्लान कहो सलाबत खान ॥ दोहा ॥ सुनो सलाबत
खांन कहे दिल्लीपत थांन ॥ आम खासकुं जोड दि-
खावो जलदी ह्लांन ॥ सबकी आज सीताब सलामी

लेवो प्यारा कुण कुण मुजरखांन ओर उमरावकी सब तलास कराईया ॥ न्यारा न्यारा ताडल्यो सझार कुण कुण मुजर आईया ॥ आज०॥ १ ॥ टेर सलाबतकी ॥ मुजरे अमरसिंघ नहिं आया हाडी नार परण गरवाया ॥ मुजरे जैपुरताणा मानसिंघ प्रथम सिधाया ॥ बीकानेरनी सानमेडतका सब आया ॥ सतरखान उमराव वीनती कर वीचारा ॥ हाथ जोड हजरतक आग उवासारा ॥ साराउवा वीनती कर आप फरमाइयो ॥ हजरत मे अरजी करूं सयेक अमरसिंघ नहिं आइयो ॥ मुजर० ॥ २ ॥ नहिं आया राठोड जाये कुछ जोर भरीया ॥ हलकारकूं तलब गारदे दरपर करीया ॥ सीख जोडकर हाथ सात दिनकी उन लीनी ॥ चोदा दिन गया बीत आनकी सुरत न कीनी ॥ सुरत न कीनी आनकी चोदा दिन बीताइया ॥ हाडी राणी व्याह कस हिंदु मनम गरवाइया ॥ ॥ आज० ॥ ३ ॥ गरवीलका गरवहु कंम थारसे डालूं ॥ चसका उसका सेज तणां में सबी निकालूं॥ येक येक दिनका दंड रुपैया लख लख लेऊं ॥ दो लख लेऊं वात खलासी जद में देऊं ॥ प्यादन कागद दीयो में हजरत पास लिखायके ॥ चढ जावो इस बखत लीयावो अमरसिंघकुं जायके ॥ मुज० ॥ ४ ॥

हलकारेकी अमरसिंघसू टेर ॥ राठोड हुई छ चुगली थारी बदस्याके सामनै ॥ दोहा ॥ चुगलखोर थारी चुगली खाकर बदस्याकुं भरमाया ॥ हजरत आप लिख्या परवाना सीख जरूर मोय खीनाया ॥ मत ना करो देर तुम चालो मैं लेणकुं आया ॥ हुसियारीसेती चलोजी थ्योनी गफलत छाड ॥ कपट रच्यो गढ आगरस होये सावधान राठोड ॥ जोड जावो फोजा सारी ॥ चुगली० ॥ १ ॥ टेर ॥ झारी अन्याई बदस्या स्यांमन चुगली किन खाई रै ॥ दोहा—चुगली खाई कूण हमारी बदस्याके दरम्यांन ॥ असो दुसमनकूं न हमारो हिंदु मूसलमांन ॥ साची बात खोल कहो झान चपडासी सुरग्यांन ॥ सुरग्यानी मोय खोलकरै सारा कहो विचार ॥ क्या क्या बात चली थी झारी स्याज्यांके दरम्यांन ॥ सुना थ्यो मुजकूं भाई ॥ चुगली० ॥ २ ॥ भाइ होय भाव राखसो और झूठ तोफांन ॥ भरी कचेरी खीज्यो आप पर वो बदस्या स्याजांन ॥ थे नाहिं मुजरै आया चुगली खाई सलावतखान ॥ रीस भरे खीजकर कही उन दिल्लीपतनाथ ॥ सलावत उस अमरसिंघपर दंड करो लख सात ॥ निजर थारी लेवा न्यारी ॥ चुगली० ॥ ॥ ३ ॥ न्यारी नजर सलावत न देऊं मेरा यही तो इरा-

दा॥ वोह बकसी फोजका सरै उसका चाये ज्यादा॥ कटारीस्युं बांट देऊं दोन्याने आदा आदा ॥ आदा आदा बांट द्युं पूरा कूढा दोय॥ कांट धरकर तोल ल्यो नहीं सहलक भारी होय ॥ घटै तील भर ना राई॥ चुगली० ॥ ४ ॥ राईसें परवत हुई राजा येक समैं सूनू बात ॥ कहा कृष्णको घट गयो सजी भृगुजी मारी लात ॥ मोटासेही जानियो तो जी छोटास्युं गम खात॥ सलावतीयोकुं जडो सरबोके जाण उत ॥ असी बात विचारियो सथे राठोडा रजपूत ॥ रह ज्यूं दूद दुहारी॥ थारी० ॥ ५ ॥ दूद दुहारीकै मारख द्यूं तल पडन द्यूं नांई ॥ साण चडी मेरी सांग उसे अटका ल्यूं इसकै माई॥ वाद दिवा हथियार त्यार कीया सलावतक तांई॥ कहन दंड दुवारनके कहन दंड देउ माह ॥ बजा बजा देऊं सलावतन फूटचा देउ नांह ॥ रुपीया नया नयाई॥ चुगली० ६॥ नया पुराणा लेकर जलदी तखत आगर आयो ॥ खीजे हुये बदस्यान थे मत रहकर ओर खिजायो ॥ म्हे जावां छांथे राणी पा बैठ विलंब मत जाये ॥ सीख लेर राठोडपा मै जलदी आयो चाल ॥ बदस्यां कही आवछो वो अमरसिंघ भोपाल ॥ नोकरी पकी हमारी ॥ चुगली० ॥ ७ ॥ सेर राजा अमरसिंघको ॥ बदस्यांपा सीख म्हे जक

लई दिन सातकी ॥ वीत्या दिवस दस च्यार मेरी भूल हो गई बातकी ॥ देखस्युं गुंजस अब जाक तुरककी जातकी॥ सीख जल्दी दे मुजे नहिं ढील मेरस्यातकी ॥ १ ॥ सेर ॥ बैठे थे सुखकी ऐसमैं किसपर मेरे अब रोस जी ॥ जंगल मतो लडते थे दो येक सिंघ येक खरगोसजी ॥ खरगोस हो सींघ स्यु लड भूल्या फिर बेहोस जी ॥ किसमत ह कंम उसकी पीया नहीं ओर किसकुं दोष जी ॥ २ ॥ टेर ॥ थासैं मुजरो पावा जावा म्हे तखत अगर कांमनी॥ह्मे जावां गढ आगरस प्यारी करके सारीया रंग ॥ दो दो बात करां हित चितकी सलाबतक संग ॥ क्या ताकत उस तुरककी तो मेरे करै स्यां मन जंग ॥ जंग करै मेर स्यांमनजी क्या उसकी ओकात ॥ जाय दिखाउं खानने सभै रजपूतीका हाथ ॥ आगर जांण द्योजी ॥ हाये प्यारी सलाबतसै बात दो कर आण द्योजी ॥ मेर लग रह्योचाव फिर सलाबत तो दाव ॥ चुगलनै चेत करावा ॥ जावा० ॥ १ ॥ टेर ॥ थे रमकर संगी पीवजी सह्मारी सेज सुरंगी करी ना करी॥दोहा–सेज सुरंगी करी न पूंछी जिगर मरमकी बात ॥ थे चढ चाल्या आगर सह्मारी छाती धडका खात॥ रह गई पीव जगावणी सह्मारी पसारारी रात ॥ म्हे लुं

म्या ढोल्या कस्यो कमर कसी तलवार॥ सुण राठोडां राज वीस थांन कहती हाडी नार ॥ हठ न छाड द्योजी ॥ येजी थे तो द्यो घुडलान बांदकमे खां गाड द्योजी ॥ आज आज रह ज्यावो ॥ काल थे ताज तुरंग कसावो ॥ करो मत घणन तंगी ॥ पीव० ॥ २ ॥ तंगी करां बादस्यान तूं हाथ हमारा देख ॥ सलावतके रोप स्यांस झे छाती ऊपर मेख ॥ दुसमननै मारणका म्हार बिदना लिख दियालेख ॥ मत पिसतावो आप किरषकासीव सुत टेक ॥ लख रानी टुक रानियांस तूं ज्या बीच हाडी येक ॥ नहीं पिसतावणाजी ॥ रैस्यां आजकी रात ॥ म्हे तो थार पावणाजी ॥ रहा रातकी रात करा थासे हेत प्रीतकी वात ॥ सुब घुडलां कसवावा ॥ जावा० ॥ ३ ॥ जावां जावां मत करो सह्मारा राठोडा सिरदार ॥ थार बिन ह्मार सूरमां तो जी सब फीको सिनगार ॥ ज्यूं उजीर बिन सतरंज सुनि ज्यूं चोपड बिन स्यार ॥ सागर सूनां नीर बिन जी-ज्यूं सूरां बिन जंग ॥ एक नथ बिन नार कजी सब सिणगार बीरंग ॥ कपटी आगरो जी ॥ बांद्यो बदस्या वैर हमारे भागरो जी ॥ तूरक तखत पर कर न्याव छेजी ॥ थाको जलद सुभाव फोज संग उनक जंगी ॥ पीव० ॥ ४ ॥ जंगी फोज नहिं हमसे मत

बात करो बेढंगी ॥ बीकानेर मेडतका उमराव तेग झार नंगी ॥ बदस्या तणीक चेडी मैं झारा सब हो ज्यागा संगी ॥ चापाकू पामेडत्यास जीस्या झा खीची गोड ॥ मारवाडका बंकडा सझे राजकुली राठोड ॥ तुरकनै ताण द्याजी ॥ लेवां कचेडीमें घेर पैरे नहिं जाण द्यांजी ॥ सेरखान पठाण ॥ फोज बारा हजारको खान ॥ भाई न झार साथ मिलावा ॥ जावा० ॥ ८ ॥ करो रंग थे संग हमार परभातां उठ जायो ॥ रचकर राम मनै दुनियांको कै व्योहार दिखायो ॥ दूदनभी ज्यांका चवास नहिं बालक गोद खिलायो ॥ नाई बामण दोमरो ओर मरज्यो बावल माय ॥ चाकर चरवादारकै समनपलै दई लगाय ॥ चाकरमान चाकरी जी ॥ सेर चूनक काज जान तज जा परी जी ॥ मुजकूं करनी रास ॥ जाय ज्यो चुगलखोर थारो नास ॥ बात कर दई बिरंगी ॥ पीव० ॥ ६ ॥ करा सुरंगी सेज आपकी आज रातकी रात ॥ रहणो किण बिद होय बादस्या दंड मांग्या लख सात ॥ ॥ लाख बात नहिं टल बडी बानी चतुरककी जात ॥ मत ना बारजो गोरडी जी झान हाडी नार ॥ कह्यो मांन ले कांमनी सह्यानै ला द्यो सेल कटार ॥ ओरम द्योसला जी ॥ आज रमा थारी सेज ॥ करां म्हे हेत

प्रीत आमेज ॥ हरख आनंद फल पावां ॥ जावां० ॥
॥ ७ ॥ फल पावां ढोले आवो थे मुरधररा नाथ ॥
आसो पैलै तो डरो समैऊवी लीना हाथ ॥ आप
पीवो और हमकूं प्यावो रलमिल पीवा साथ ॥ जो
डंड मांगै बादस्याायाकी तीक जबरी बात ॥ येक
लड तोडि हार किस थारा भर देस्युं लखसात ॥
बात कहूं आपनैजी ॥ वोजीम तोर कंम मंगा द्यूंगी
और ॥ लिख मेर बापनै जी ॥ थे मुरधररा नाथ ॥
आगर लेकर चालो साथ ॥ चूनडी मेरी पंचरंगी ॥
पीव० ॥ ८ ॥ थारी चूनड नार सलामत राखै
सिरजनहार ॥ भाई जसवंत रामसिंग थार छै दोन्यु
हुसियार ॥ झ्यान पकड बादस्या तोबै ले आवे ले ल-
कार ॥ अमलारी मनुहार द्योजी खाद्यो थारो
दाव ॥ आसो लाग आकरो समनै मत ना प्यालो
प्याव ॥ दाव नहीं झालसीजी ॥ प्यारी मेर सला-
बतका बोल ॥ नसै मसालसीजी ॥ काल पहूंचा
ठेठ तुरककै करां तखतकी भेट ॥ ठेठ रकंम पुग-
वावा ॥ जावा० ॥ ९ ॥ जुबाब राणीको दासीसें ॥
॥ सेर ॥ रीस भरीयो राव दासी आगरकूं जायरी ॥
करके अकलको पेच चेरी पीवकुं बिलमायरी ॥
स्यामसे संग राम इस दुनिया मनही खटावरी ॥ दे

पींजरे मखान सींघका मांन सब घट जायरी ॥ १ ॥
॥ टेर ॥ मांन घटसी ना मती पीसतावो हाडी ना-
रजी ॥ राजा न देख्या खान सब होज्या कचेरी पा-
रजी ॥ बैकाकरसे सेर मारे स्यांमने ललकारजी ॥
दीली तखतकी ढाल राजा अमरसिंघ सिरदारजी २॥
॥ टेर ॥ राजाजी न दासी थे बिलमावो ये म्हलांमें
ल्यावो ॥ दोहा ॥ रीस भऱ्यो जोधाणनाथ
दासी दोड आगर जाय ॥ चुगली करकर सलावत
दीयो बदस्यान बहकाय ॥ कांई भरोंसा सांप कोस
दासी बिन छेडे डस जाय॥ रीस भरचोडो बादस्या-
ये कर रह्यो घात अनेक ॥ उसके फोज अपार हये
मेरो प्रीतंम एक ॥ भेष मुंगलारो भारी ये लाख
बाई ससंवारी ॥ हाये थे तोये पीवजीन हाथ जोड
समझावो ॥ मारु० ॥ १ ॥ टेर ॥ मारुंजीको ल्या-
वो छेअत भारी ये बाईजी म्हारी ॥ दोहा ॥ ल्यावो
मुसकल रावको सम्हार नई फंदमें आव ॥ सींघ
सूरमो मांन नाई बोली ऊपर जाव ॥ क्या ताकत
वोस्या लियो ससींगा सैनी जर मिलाव ॥ वो दीली
पतस्या लियो ये समज नहीं अचेत ॥ तेरो प्रीतम
सिंघ हये लडे येकलो खेत ॥ कचेडीमें ललकार ॥
येक दुसम न चुग चुग मार ॥ हायेड कीये देख

बाई सीभागसारी ॥ म्हारवा० ॥ २ ॥ उसकी सारी
फोजको समेर पीवक ऊपर घात ॥ लाखूं दलमें ये
कबलीका दासी पडै न हाथ ॥ कोई मुगलीयो मार
लेव राजान अलीस्यात ॥ बंध्या जोकां गण डोर
डाये देणीर गई जात ॥मुख मीठा कपटी घणा घाल-
ही बड घात ॥ दगैस्युं पीव न मार ॥ ये दया नहीं
दिलम धार ॥ हांये मेर ये पीव परदे राख्यो मुंगलां
धावो ॥ मारुं० ॥ ३ ॥ धोरवो देर दुसमनानवो मार
थारो स्यांम ॥ असल और कंम सलमा फर कह
कठे आंक कित आंम ॥ असली तो वोगुन तज
सये गुनकूं तज गूलाम ॥ गुलाम गुणकूं त्यागतो
ये मनम करै न हाण॥ तेरा पीवजी सिंग हये मुंग-
ल्यां भेडचां जाण ॥ भेड नहीं सिंगन पाव ॥ मति
मनमें पिसताव ॥ होये वो तोजी मुंगल्यांरी
करसी भोत खुवारी ॥ म्हाराबा० ॥ ४ ॥
करकर खार बादस्या पर झारो पीव आगर जाय ॥
सीख जो मांग बारबार झार लगै बदनमें लाय ॥
बालूं जुलमणजी भनसमै किण विद कहूं सीधाय ॥
जाबां जावांका वचन ये झास्युं सहाय न जाय ॥
जो बालंम जाव नहीं तोए लाखु देउ लुटाय ॥ जाय
पीवन समझा दे ॥ ये येक बर उरबू लादे ॥ हाये

कह्यो थे बूंदीकी कटारी लेता जावो॥मारुजी०॥८॥
नांव कटारीको लेकर राजाने ल्याओ ईवार ॥ असै
कह्रो जाय ज्यो दो दिन करकर तीज तीव्हांर ॥
रानी बेठे म्यांनम थे घुडलांपर असवार ॥ एक-
समै नहिं तीज पयें आयो नर सुलतान ॥ चींता
चींणा कर बागमें उन तज्या न्ह्याल दे प्राण ॥ उसी
मत करकर जावो ॥ जी बात मनमें व्योपावो ॥ हांये
असैम कहस्युं थार पीवन बीथा ये तुमारो ॥ म्हार-
बा० ॥ ७ ॥ दासीकी राजासे टेर ॥ राव था न
बाईजी बुलाव म्हारी वो देणन बुंदी तणी कटारी ॥
॥ दोहा—महीपत नृप म्हाराज मान तुम रखो हमा-
रो ॥ हाडी जो ववाट हमल राठोड पधारो ॥ सुगन
होय थांन मंद छोकरी छीक्यो राई ॥ सत्तरमीर-
गकी डार चालकर बांई आई ॥ पंडत पढकर वेद-
न मुहूरत नहीं बतावता ॥ इन सुगना सिरदार सम-
ज ल्योकोई न चडकर जावता ॥ राव० ॥ १ ॥
टेर ॥ ये नार थारी बाईजी न समझावो॥ ये मत ना-
हक देर लगावो ॥ दोहा—जावा नार ईवार आप मत
विलंब लगावो ॥ रानीन समझाय सीख ये म्हान
द्यावो ॥ सुगन भला भगवान तणा सुण प्यारी
दासी ॥ चारो माग डार छोकरी वरकी प्यासी ॥

आप आपकी सब कह सुण ल्यो चात्रग नार थे ॥ पंडित मांग दक्षिणा सएनद्या द्यो नोसर हार थे ॥ नार० ॥ २ ॥ हार भार सिणगार नारका थे वकसावो ॥ बिलसो सब परवार आगर मत ना जावो ॥ घुडला पाछा घेर फेर कीज्यो चित चायो ॥ बुंदी तणी कटार देणन नार बुलायो ॥ नो म्हला रानी खडी लगर द्यो तुमसें ध्यान है ॥ नहीं चालो तो गिर मरे सवादे खजरासी ज्यान है ॥ रावथा० ॥३॥ ज्यान जीगरकूं राख नार तूं मत ना त्यागे ॥ दासी घुडलां मोड लियाई पाछा सागे ॥ नोम्हलेके तल ल्याय ताजी ठहराया ॥ खड्या खड्या म्हे मीलण नार हाडीस्युं आया ॥ प्यारी वारी खोलकर दरसन मोये कराय दे ॥ वा पीहरकी पेस कटारी पीहर तणी दिवाय दे ॥ नार था० ॥ ४ ॥ सिंघु राणी राजाको टेर ॥ येजी वो राठोडा राजा लेता ज्याज्योजी कटारी म्हारी ॥ वो बुंदीवारी ॥ दोहा–सुगन मना घुडलां चढो लेकर संग सिरदार ॥ बावल दीनी दाय जैसो लेता जम्रोनी कटार ॥ येजी० ॥ १ ॥ टेर ॥ येजी ये म्हारी हाडी रानी ॥ ये मारगम बदस्या उवो ॥ म्हारी ये वाट निहार ॥ दोहा–मत बिलमावो कामनी म्हान हाडी नार ॥ देवो

हितकर हाथस्युं थारी पीहर तणी तो कटार ॥ येजी०
॥ २ ॥ नारी सुनी पीव विन जीवि वसु ना विन
नार ॥ सांवत सुनो फोज बीन ज्यूं पुत्र बीन पर
वार ॥ येजीवो० ॥ ३ ॥ सांवत चढतो जूधमें रानी
कैको देख साथ ॥ उसका साथी तीन जणा हीयो
कटारी हाथ ॥ येजी० ॥ ४ ॥ राठोडा बीच राज
वीथे सूरा हद जोर ॥ मारवाडके बीचमें सथारी
दीप रही ना गोर ॥ येजी० ॥ ५ ॥ राज करां ना-
गोरको म्हे तखत आगरो तोड ॥ नो कोटी मारवा-
डका म्हे राजकुली राठोड ॥ येजीये० ॥ ६ ॥ कर
विच कंकन दोरडा थारजी बरची छ अपार ॥ मुं-
गलां हंद देसमे थारी कुण झेल तलवार ॥ येजी०
वो० ॥ ७ ॥ सजकर सस्तर हो खड्या रानी धरां
रही छे धूज ॥ ऐस मुंगल बंदारस्युं जाणी चतर
नार तरबूज ॥ येजीवो० ॥ ८ ॥ कारीगर काफी
घडी तेज बुणाई धार॥ नागन ज्युं नखरो कर भारी
बीछवन डंक कटार ॥ येजीवो० ॥ ९ ॥ कारीगर-
का पीघडी थारी कटारी हदवेस ॥ रानी दीनी हे-
तस्युं म्हांन पीहरी थारी पेस ॥ येजीये० ॥ १० ॥
इतणी थास्युं बीन तीरह ज्यो बदन बचाये ॥ येक
प्यालो पीकर चढो फिर कद मिलस्यो आये ॥ ये-

जीवो० ॥ ११ ॥ रागनी रानीकी भैरवी ॥ हाथ रोह मारो ये कदाववो चतर ढोला ॥ ये जीथे तो पीवोनी हमारा उमरावबा ॥ आसो पलै तो डरो जयो तो काड्यो छै कला लीकरक रचाववो ॥ चरत ढोला० ॥ १ ॥ हाडी प्याव हेतस्युं जी राज थे तो पीवोनी जोधाणारा राववो ॥ चतरढोला० ॥ ॥ २ ॥ अबका विछड्या राजवीजी फेर कद मिलस्यो जी आयवी ॥ चतर ढोला० ॥ ३ ॥ समसेरां रवाड दोजी ये जी थे तो भालां भालां अणील्यो कढायवो चतुर०॥ ४ ॥ जो मैरो बालम जानही जी मैं तो सब धन देऊं तो लुटायवो ॥ चत० ॥ ५ ॥ चडो चढावो सीद करोजी थांन ल्याव देवी करनी जीतायवो ॥ चतर० ॥ ६ ॥ ॥ राजाकी लावणी ॥ रंगतखडी भैरवीमें ॥ टेर ॥ मेरा दिलपर खारयारम सिंग ज्यूं मैं ललकारूंगा ॥ बदस्याकी कचेडी बीच उस चुगलखोरकुं मारूंगा ॥ . दोहा ॥ ताजी कर कर त्यार यार मैं चडनकी चितपर ठानी ॥ बागडोर घोडकी आंनके पकड लई हाडी रानी ॥ हाडी बोली ये महाराजा चढ चाल्या मुगलांर देस ॥ मुजकूं छोडी कीस कैसा हर ॥ छत्रपती मेरा पीव नरेस ॥ मै बोल्या तेर पास रामसिंग भाई जसवंत

सिंग बंका ॥ धाक आगर पडी उनुका बदस्याई मानी शंका ॥ ऐसे रानीकूं समझाई ॥ पाछी झलु माय खिनाई ॥ कटारी पीहरकी मोय ग्वाई ॥ घेरक जांम मांहि छिपाई ॥ बखत पड्या परमे गंम कटारी काड काड फटकारूंगा ॥ ब० ॥ १ ॥ चल्या सीरै नागोर तखतसै मै ताजीन छेड दीया ॥ ओर न दूजो संग मेरे येक सागेकी सना खवास लीया ॥ मात भवानी आगई दाहनी सुगन भलेरा पायाजी ॥ हंम चंद रोजके अरसेसेती तखत आगर आयाजी ॥ जाके देखुखासकीलमें आग सलावत खडा हुया ॥ पेसकबज संमसेर लिया बंदुक संजीना जडा हुआ॥ मुजकूं सलाबत बतलाया ॥ करकर हेत पास बिठलाया ॥ वायदा सात दिनाका ग्राया ॥ रंघड चोदा दिन क्यूं लाया ॥ सात लाख उन दंडका मांग्या मह कही देकर तारूंगा ॥ ब० ॥ २ ॥ नांव लिया मुजकूं दंडका तुरक जात मती हारी जी ॥ मै कोतेखानी काड कटारी संलाबतकै मारी जी ॥ लगी कटारी बीच कलेज हाड पांसली तोड गई ॥ सलाबतिये करमहीन दुसमनकी पींजर फोड गई ॥ घायल होक आमखासम पड्या पुकार प्यास मरूं ॥ रे कोई प्याव पानी फिर मैं जीता चुगली नांह

करूं ॥ यो सलाबत फरमाई ॥ अब मैं करी जी सीदीपाई ॥ मारा मैं बडी हुरंमका भाई ॥ देख बदर स्याकी ज्यांन घबराई ॥ हजरत तणै खजानमैं अब भरभर थेली डारूंगा ॥ ब० ॥ ३ ॥ सलाबतकूं चुका दिया अब बदस्याकूं दंड देता हूं ॥ सात लाख की रकम चुकावण हाथ कटारी लेता हूं॥देख तेज मेरा बदस्याकी बाईसी घबराय गई ॥ राजा ओर नबाब त्याग बदस्यान हमकूं मदत दई ॥ सलाबतकूं मारा देखकर बदस्या मनमें फिकर किया ॥ छांड तखतसें गया महलमें हुरंमखाना जाय लिया ॥ होस्यो बकस रामगुर पाया ॥ छंद्- म्रटी गाना बतलाया ॥ ख्याल गुरु गोविंद राम सिखलाया ॥ दो गुर न्यारा न्यारा पाया ॥ तेली कह उजीर मेरे मैं दुसमनकी छाती जारूंगा ॥ बदस्याकी कचेडी बीच उस चुगलखोरन मारूंगा ॥ बद० ॥ ४ ॥ हुरंमको बदस्यासे सेर ॥ ॥ क्रित गई करामात हजरत आपकी सो बूजती ॥ इकीस आना फोज थी नहीं पाव आना सूजती ॥ इस सूर- माकी ज्यांन परगमैं अकेली झूंजती ॥ राठोडका तप देखक सारी कचेडी धूजती ॥ १ ॥ ॥ सेर बदस्याको ॥ इस बखत कीनी खैर मेरे पां

कवी परवरदिगार ॥ स्यामत गुना सूज बटलाम हो-
गया परगैसुवार ॥ इस सलावतक बोलका उस अमर
सिंघका दिल पैलवार ॥ क्या भरासानीचरंघडका
मुजे लेतावो मार ॥ २ ॥ टेर रंगत माड कालंग-
डा ॥ ॥बाईसी थारी जी पीव जीवा आज कठे मारी
गई ॥ दोहा ॥ कहां तेरा सतरखांन गया वोर कहां
बहत्तर उमराव ॥ वीर सलावत मरचो देख झार बे-
गयो हीवडघाव ॥ तरी परग गई डूब नहीं चल्यो
येकको दाव ॥ दाव चल्यो ना येक नांव थारो लाज-
तो ॥ यो खडचो येक राठोड सिंघ ज्यूं गाजतो ॥ बा-
ई०॥ १ ॥ टेर बदस्याकी ॥ तज रोस दिवांनी बेगम
बेहोस जीकर मत ना कर॥दोहा—तजो रीस मत करो
जीकर प्यारी सुनै अमरसिंघ भूप॥तेरो भाई सलावत
छो चुगला हूं दो रूप ॥ मरगया जिसकूं मरजान द्यो
थे हो बैठो चूप॥थे हो बैठो चूप मान मेरा कहा॥ तुम
येही गनीमत समजो मैं जिता रहा ॥ तज० ॥ २ ॥
जीकर आप करा क्या हजरत खोदी लाज बडाई॥
खाख पडी इस जीवणम मेरो मरचो सलावत भाई॥
सब उमराव खांन परगै कानी कस्या होये लुगाई ॥
नीकस्या होय लुगाई गया सब दोड जी ॥ यो येक
लडो खडचो सिंघ राठोड जी ॥ वा० ॥ ३ ॥ दोह

छुडाद्युं सारी मैना गोर जोधपुर घेरूं॥नाक फोडकर नाथ घालऊ न देस देसम फेरूं॥उस अनवीराठोड-सींघन पकड पींजरे गेरूं ॥ पकड सींघ नजंमी बीचमैं गाडस्युं ॥ मै करुं भोतसो टालो अबै नहीं छाडस्युं ॥ तज० ॥ ४ ॥ छांडी बैठक तख-तकीस थे झूठी कर रह्या बात ॥ कपडा पहर मह-लम बैठो होकर बेगम जात ॥ मैं लडस्युं राठो-डस्युं समेर खांडो देद्यो हाथ ॥ खांडो देद्यो हाथ करूं मन चावती ॥ यो पद्यो सलाबत देख रीस मोये आवती ॥ बाई० ॥ ५ ॥ तजो रीस इस ब-खत पकड उस रंगडकूं मंगवाऊं॥ आंम खासकूं जोडकर सम बीडा फजर फिराऊं ॥ अमरसिंघकुं गेर पिंजर जद अंनपाणी खाऊं ॥ जद अंन पाणी खाऊं येही परनाम है ॥ बिन पकडे उसकूं खा-णा मुजे हराम है ॥ तज० ॥ ६ ॥ खाणा होगया जहर पडा इस सलाबतकूं देख ॥ कैसा गजब करा रंगडनै दई तखतपर मेख ॥ थेजी तो किस पुनसे सथार साग भूषो भेष ॥ साग्र भूषो भेष मुह्राणी ममोडस्युं ॥ मेरे खांडो देद्यो हाथ लडूंराठोडस्युं ॥ बाई० ॥ ७ ॥ हुरमको अमरसिंघसे सेर ॥ राठोडतै परग मैं क्यूं आके मचायो सोरूर ॥ नेपीर

हीमत हार ऐसा क्या तुमारा जोरूर ॥ किसकी न करता कांण क्यूं कूक खडा जु चोरूर ॥ चूपका कीलस्यूं भाग जा जीया चाहे तो वोरूर॥सेर अमरसिंघको॥भागा मेरा तप देख वोस्या जान बदसाहारक ॥ भेडूं कऊपर क्या करूं इस कटारीकूं वारक॥ चित खुसी मेरा हुया इस सलावतकूं मारक ॥ बीबी तूं हट ज्या दूरकू आकर फीरी मेर बारक ॥ २ ॥ टेर ॥ तैं बदस्याईमै रंगड क्या धूम मचाई आनक ॥ बदस्याईम आनक सक्यूं नीकमी धूम मचाई ॥ थोथीकर रह्यो गाज खड्यो क्यूं झूठी करे बडाई ॥ इब कित जासी जीवतो समेरो मार सलावत भाई ॥ कुलदीपक सलावतो रेसाये रसगर सुधीर ॥ येक कवर छो बापको सयो मेर येकही वीर ॥ मात कयो एकू छोरे ॥ नारमरगी अंकीरो ये बालो भेष छोरे ॥ करकर खार हत्यारा गेरो जीवसूं मार ॥ तन कुछ दया न आई ॥ रंगड० ॥ १ ॥ ॥ टेर अमरसिंघकी ॥ ॥ तूं समज सियानी बेगम बिन मोत दिवानी क्यूं मर॥ समज सियानी बेगम तू मेर कर स्यामन बात ॥ वोरत जात समज कमै नहीं करूं तेर पर घात ॥ सलाबतकी मोत लिखी छी विधाता मेर हाथ ॥ बंका आग बंकडा मे रंका

आगरंक ॥ सीदा आग पादरा म्हे तीरबंका चोबंक ॥ म्हे भोपाल छांजी ॥ प्यारी विप्रगऊका दासक दुरजन साल छांजी ॥ सलाबत तेर भाई हमारी झूठी चुगली खाई ॥ बादस्या सचकर मानी ॥ बेग० ॥ २ ॥ सचा परचा बदस्या पातन पगके पग दिखलाऊं ॥ वो नागोर जोधपुर थारो मैं सारा जेल मंगाऊं ॥ कुटुम सहित तोये पकड कसम कोलूम पिलवाऊं ॥ पेट घपाईको मिल्यो तन बदस्याई सुनाज ॥ मसत हुयो जद स्यामन समन मारण आयो आज ॥ बोल रह्यो भुंडी बानी ॥ दीन दुनी कसाम तणी थे कोण न मानी ॥ खाकर चून हराम बदल ज्यायेका फरका काम ॥ पडवो नरकामाई ॥ रंगड० ॥ ३ ॥ नरकामाई सलावतीयो खुले किवाडां जातो ॥ रजवाडांकी झूठी चुगली बदस्या आगे खातो ॥ सिंगा तणा मंगाकर डोलावो गीदड सागे ल्यातो ॥ धरम छीन सवन करचा सउन सलाबत बेहोस ॥ झूठा भरतो कानं बैठके क्या बदस्याने दोस ॥ चूक नहीं वोर कीये ॥ हाये प्यारी बदस्या लेतो मान बात उस चोरकी ये ॥ अब मैं रचकर ठाठ दई छै लडी नीचकी काट ॥ गयो वो नरका कानी ॥ बेगम० ॥ ४ ॥ नरक सुरगका भाव बांद

मत मुखसूं बोल सह्माल ॥ आज कर मेरो ख्या मनो सतूं नोकर रहछो काल ॥ उस बदस्यान कहकर तेरी भूस भरवाऊं खाल ॥ बाईसीका मोरचा तेर सुन मुखदेसूमो झोड ॥ बीना मोत मरज्यायसी सतूं अमरसिंघ राठोड ॥ नार तेरी रो मर रे ॥ स्याम संग संग राम दिवाना क्यूं कर रे ॥ मुंगल हमार पास तेरो बचुटी चुटी मास ॥ बांटकर खाज्या भाई ॥ रंगड० ॥ ५ ॥ भारी मुंगल आपका मेर आगे भेड समान ॥ नोकोटी मारवाड लार ह्मार फरकत लाख निसान ॥ ह्मारा देख्या सूरमास ये भाग धारा खान ॥ तूं मत जाण येक लोस मेरे फोज भोत छलार ॥ असो जनम्यो कूंण लड मोसें सनमुख भुजा पसार ॥ मारूं तेरे थाप कीये ॥ हाये प्यारी नीमक खाये कीये ॥ मतो काण भोत करी आप कीये ॥ मुखसें कहकर राम बदल ज्या येक मसलका काम ॥ जाऊंके तेरी कानी ॥ बेगम० ॥ ॥ ६ ॥ मेरे कानीके देखत न पलम पकड मंगाऊं॥ बदस्याने समझाये के. सम बीडा फजर फिराऊं ॥ बाईसीका फेर मोरचा तुजकूं सीज्या कराऊं ॥ धीरा धीरा ठाकरा धीरा सब कुछ होय ॥ माली सींच रात दिना पण रुत आया फल होय ॥ बिना रुत

फूलन लाग ॥ क्यूं उवो बकवाद कर तूं मेरे साग ॥ मुबे कचेडी जोड मंगाऊं तुजे पकड राठोड ॥ जेल दू देकर घाई ॥ रंगड० ॥ ७ ॥ बादस्याकी टेर ॥ पकडकर अमरसिंघकुं लावे रसो मुलक मालवा पाव ॥ दोहा ॥ छप्पै ॥ बदस्या मे उमराव खान बुलवा लीया नीडा ॥ आमखासकूं जोड मेल दीया तेगा वीडा ॥ जो बीडकूं खाय पकड अमरकूं आव ॥ आदीयु गुजरात मालवा सारा पाव ॥ सारा पाव मालवा जो अमरसिंघकूं ल्यावता ॥ सबका नीकल्या अंस कोई नहीं तेगा वीडा उठावता ॥ पक०॥१ ॥ टेर ॥ बीडा झेल्या अर्जुन गोड हजरत मैं ल्याऊं राठोड ॥ दोहा ॥ हुकुम करो तो तेगा वीडा मैं अब ठाऊं ॥ उस अनवी-राठोड सिंघनै पकड ले आऊं ॥ कहो तो काटू सीस कहो तो सीस न छाडूं ॥ कहो तो कर कर टूक उसे भूमीमें गाडूं ॥ वो .गीदड क्या पावता मोये सावत अरजुन गोडन ॥ पांच लाखका मुलुक दिवावो मैं ल्याऊं राठोढन ॥ वीडा० ॥ २ ॥ पांच लाखक ऊपर... देऊं नोबत बाजा ॥ देकर देस अपार मुलकका कर देऊं राजा ॥ हस्ती घोडा फोज भोत तेरेकूं द्याऊं ॥ तामा पत्र मंगाय हाथ-

स्युं अबी लिखाऊं ॥ एक बात मेर कमजचर तुम दोनूं एक जातका ॥ तूं साला ओ बनेई क्या पतियारा थारी बातका ॥ पकड० ॥ ३ ॥ बात जात म्हारी येक दोय मत हजरत जोव ॥ करता नीमकहलाल असल जो छत्री होव ॥ नीमकबजा रजपूत पिता पुतरकूं मार ॥ स्याम खोरजो होय काम खावदका सार ॥ काम सवारूं स्याम मे मेरा दिलयूं जागता ॥ किसका साला कून बनोई झगडेमें क्या लागता ॥ बीडा० ॥ ४ ॥ तेरी सुनकर बात हमारा दिल उमग्याया ॥ ल्यो पांच लाखका मुलक पत्र ताम लिखवाया ॥ अब अमरसिंघकूं ल्यावो मनस्या पूरी थारी ॥ सनमुख जायेर पकड दगेसे मत ना मारी ॥ चेत कराकर पकड ज्यो उस अनवीराठोडन ॥ खुसी हुया सब खान देखकर चढतो अरजन गोडन ॥ पकड० ॥ ५ ॥ अरजुनगोडको सेर ॥ अमरसिंघजी थे सुणोयो कहै अरजुनगोडजी ॥ हम मदत देवाचो गणी रहो खुशी थे राठोडजी ॥ थारी हमारी फोज सारी करा भेली जोडजी ॥ दे धाक फेरुं दुष्टकुं ल्या आगरन तोडजी ॥ सेर ॥ तोडो थे जाकर आगरो मत आ मेर हीजूर रे॥भैं भरचौ डारी सका हटज्या मेरेसदूर रे ॥

क्या मेरसे प्यार करता ओर तूं बेसूं दूर रे ॥ लग-
ज्या मोहबत हाथकी होज्यागा चकनाचूर रे ॥ ७ ॥
॥ टेर ॥ अरज सुन अमरसिंघराठोडजी थांन क-
हता अरजुन गोड ॥ सुनो अमरसिंघ छत्रपती जो
धाणारा सिरदार ॥ हीमत मत ना हारो जो थान
देस्यां मदत अपार ॥ मिलकर तोडा आगरोस
तुरकांन करा खुंवार ॥ अरज० ॥ १ ॥ टेर ॥
गोड मत आव मेर हजूर हमसे परे खडा रहो दूर ॥
॥ दोहा ॥ परे खडा रह अरजुन में परतीत करूं
नहीं थारी ॥ तूं बदस्याको सामलीत क्या नीस-
पत थारी म्हारी ॥ चलतो सरप छेडकर तूं मत लेव
मोतहु धारी ॥ गोड०॥२॥ लेईहु धारी मोत सलाबत
थार सागलडक ॥ घणा रंगथां न सुरमातो थारी
तेग तडत जूकडक ॥ कोई यन जीत्यो मुलक मस-
जी राठोडांसूं अडक ॥ अरज०॥३॥ अब्यो अमर-
सूं सलाबती यो कपटी कुटिल खुवार ॥ काण करी
नहीं दंड मांग्या उन म्हारकन गुवार ॥ बदस्या तणी
कचेडीम उन गेरो जीवसे मार ॥ गोड० ॥ ४ ॥
मार्‍यो जीसै सलाबतन रंग सुरमा थान ॥ गोडा
टीस फोज मंगा यूं और हुकंम करो म्हान ॥ अड-
कर साख आपनु राजा दीन दुनी सब जान ॥

अरज० ॥ ५ ॥ साख साख तूं क्या करेस तेरा करूं नहीं विसवास ॥ कासीवसुत दे बीचमैस फिर आज्या मेरे पास ॥ गंगाजमुना सीस धरो फिर हमसे कर इकलास ॥ गोडम० ॥ ६ ॥ प्यार करणकी खातर मैं लि गंगा जमुना सीस ॥ कासीवसुत सुरजकी सोगन खालई बिसवा वीस ॥ मैं साला ओर थे बनोई तज द्यो राजा रीस ॥ तजो रीस आवो नो महलमें करां बात कचेडी जोड ॥ आगे आगे मैं हो लीना ल्लार लरा अरजुन गोड ॥ नो महलेकी खीडकी आगे उबारह गया गोड ॥गोड०॥ ७॥जडी पोल और खिडकी खुल्ली नहीं राजा सीस निवाव ॥ पली काढ्या पैर अगाडी देखो कालरावको आव॥मैं मारी तलवार सीस घड पडो गीडुंदाखाव॥ अरज०॥८॥ अरजुन गोडको सेर ॥ हजरत सलामी ल्यौ मैं आया अमरसिंघकुं मारक ॥ मोरी मवडतका किया धडसू जूदा सीरतारक॥ अब मुजे मोताज द्यो थारा कोल बोल वीचारक ॥ बीडा मैं खाया था सो आया अबी काम सुवारक ॥१॥ सेर॥ काम खोटा तै किया बेपीर हीमतहार रे॥ असे जबर छत्रीकूं तूं आया दगसूं मार रे ॥ रजपूतांका नहीं धरम ये मार विना ललकार रे ॥ नान तहं तुजकूं कंमकरंम जीना तेरा

धरकार रे ॥ २ ॥ सेर ॥ क्यूं मेरा धरकार जीना तुम कहो सुरज्ञान जी॥राठोड सागे मे दग काना किया अनुसान जी ॥ उसकी लगी मेर कटारी कट गया नाकर कान जी ॥ मेरी लगी तरवारकी जद छोडदी ना प्राणजी ॥३॥ दगा किसीका सगा नहीं देखो कर कर हाथ रे॥ नकटा तै नाक कटायक भली बिगाडी बात रे ॥ दिल्लीतखतकी ढालते ढाई करामन घात रे ॥ नावा दीया तेरा काट नीक लज्या तूं इवकी स्यात रे ॥ ४ ॥ किसनो नाईकी टेर ॥ राम सिंग रंगमें पड गयो भंग ॥ कवर थारो मच्यो आगर जंग ॥ दोहा ॥ मच्यो आगर जंग कवर मदछकियां ऊठो ॥ ईश्वर तुमरे आज सीसको सनमुख रूठो ॥ अमरसिंघजी चव्या जाय सलाबत मारो ॥ फेर बादस्या जोड कचेडी बात बिचारो ॥ वीडो फेरो बादस्या उन झेल्यो अरजुनगोडजी ॥ नोकोटीको सेहरोस जीखप्यो आज राठोडजी ॥ १ ॥ रामसिंग० ॥ टेर ॥ आज क्यूं मुखडो दीस उदास कहो म्हान साची किसन खवास ॥ दोहा॥ काकजीन खप्या बताव किसनुनाइ ॥ सुनत बात इन स्यातमे रतन मंडगी आई ॥ गोडार्टीकूं यूं लूटूं में देकर धाई ॥ ज्यूं लंकामें जसरथसुतकी फिरी धुहाई ॥

काकजीन मारियो उन बदख्या रचक जाल रे ॥ हिंदवाणीरो सेहरो छो तुरकाणीरो साल रे ॥ आज क्यूं० ॥ २ ॥ साल रहीवाघडी भई सो केद्यू थाने ॥ अरजुन नाक र कान कटाकर छीपगयो छाने ॥ उन लेकर तलवार स्वार करकर फटकारी॥राजा रह्यो अर्जांन कछू नहीं बात बिचारी॥ बिदना हुंदा ख्याल यो वरणा बीसवा वीसजी ॥ सोला सांवत मारक समे ल्यायो रावको सीस जी ॥ राम० ॥ ३ ॥ धनरकिसन खवासको लते आच्छो पाल्यो ॥ लेकर आयो सीस स्यामको लूण उजाल्यो ॥ काम सुवार स्याम तणांसे बडा कुहाव ॥ छान राखो सीस झपट जोगन लेजाव ॥ ढक पलसूं सीस नवण्यो ज्यो अपणे भाग रो ॥ काकीजी पासी खमाग चल देखा कैसो आगरो ॥ आ० ॥ ४ ॥ रामसिंघजीकी काकीजीकी टेर॥ काकीजीह्मारा छीपिया थारा सुरज आगर सहरमें ॥ सूरज छीप्यो प्यारी आगरस सुण काकी चतुर सुजान ॥ सलाबतकूं मार कस काकोजी रह्या अर्जांन फेर बादस्या तो तरच्यो उनकूं वदा हूंदी खान॥सारी फोज बुलायके लई आम खासम जोड॥ मेल्यो तेगो बीड लोस उन झेल्यो अरजुन गोड ॥ सालरावकये॥ मारी छातिकूं कर चोट तन धायक॥

अब मोय सीख दीवाये॥ लूट ल्युं गोडा वाटी जाये॥
तेगपर झडे अंगारा ॥ छीपियो० ॥ १ ॥ टेर ॥ मेरा
कंवर रंगीला मुखसैं केवात हठीला तूं करैं ॥ दोहा॥
सुन रे लडका रामसिंघ कुछ तुजकूं नहीं खियाल ॥
तूं ह्मारे कुलको चादनो सरे मोत्या मली लाल ॥
काको थारो पीव हमारो बदस्याको उर साल ॥
राठोडां मरा जवीव सूरांरा सिर मोड ॥ राज
लियो कंनोजको सवा नोस कीला तोड ॥ तूं मत
ना डर रै ॥ मुंगलांणीरी सेज घणी तो सूनी कर
रै ॥ लेव आगरो तोड तेरो काकोजी सिंघ राठोड ॥
बोलदे पलमे हेला ॥ मुख० ॥ २ ॥ हेलो बोल बा-
दस्या मारो काकोजी भोपाल ॥ आज रह गई-
आगरस ह्मारी जोधाणीरी ढाल ॥ हिंदवाणीरों
सेहरो सछो तुरकाणीरो साल ॥ अरजुन गोड दगो
कर मारचो बीना हकाल ॥ लालच कमा आमयो
सवो कर महीन कंगाल ॥ घात विचारीयो ये ॥
करीतो भेणकुं रांड ॥ बैणोईकुं मारचो ये ॥ करी न
मनमें कांण ॥ दुष्ट उन हरचा दगेसें प्राण ॥ भांण
न दिया सहारा ॥ छीपीया० ॥ ३ ॥ दियो सहारो
भैण नस उन दुष्ट गोड कंम जात ॥ दया न आई
मारतांस उन बैणोईपर हाथ ॥ मालक खप गयो

आगर सह्लार कचो छोज्यो साथ ॥ अनहोणी होणी नहि स होणी हो सो होय ॥ विदनाक अंकुरकुं सरे मेट न सक कोय ॥ लालयायुं अंडी रे ॥ वीर अर-जुनगोड उढा दई चूंदडी रे ॥ करो हत्यार पाप वीर कलगजो भेण सराप ॥ याथी भगवतकी लीला ॥ मुख० ॥ ४ ॥ लीला भगवत करी सो देखी तूं मत होव उदास ॥ सोला सांवत मारसी सयो ल्यायो किसन खुवास ॥ सीख लेवु ह्मांन सीख देवो ह्मे जावां बदस्या पास ॥ काकजीको वैर लाय ह्मे बदस्यापा जाय ॥ दारूतणी गंजमें उन ह्मार दीनी छे आग लगाय ॥ सीलग चोगणीये ॥ जो बीतादी राम सो पडली भोगणीये ॥ तुम मत करो जी विलाप सीख ह्मांन देद्यो खुसी होय आप ॥ दिखाऊं दीननै तारा ॥ छीपीया० ॥ ५ ॥ तूं के लाल दिखाव तारा उसपर राजी राम॥हठ मत कर दिवाना बदस्या आखर अ-पणुं स्याम॥स्याम संग संग राम करचोडो दुनियामें बेकाम ॥ धरा तोल तासेख प्यारे तूं बालक नादान ॥ कुल ह्मारको चांदणोस तेरी देख जरासी ज्यान ॥ मनमें यूं डरूं रे ॥ सीस पियाके संग अगनीमें जरूं रे ॥ सती होय जल जाऊं ॥ पीया संग वैकुंठामें जाऊं ॥ हठ मत कर अठीला ॥ मुखसूं० ॥ ६ ॥ हाडी

राणीकी लावणी ॥ रंगतलंगडी ॥ टेर ॥ चंदन चीता चीनाये आज म सुखसीज्यापर सोउंगी ॥ सीर ताज तिहार सीसक संग सती म होऊंगी ॥ चोक ॥ झूठो रचकर तोत बादस्या पीवन मान्या कर कर घात ॥ दया न आई कसाई बेपी री मुंगलोंकी जात ॥ जोड जोडकर हाथ भोत मेरे प्रीतमकूं समझाई बात ॥ येक न मानी ठानी चढनकी चितपर उन-स्यात ॥ सेर ॥ सलाबत चुगली करी बदस्याली झूं-ठी मान जी ॥चुगली करण सूना रह्या बोली लखी-णी ज्यान जी ॥ वो गोड अरजुनरावको सालो कप-टकी खानजी ॥ करके दगो ऊंचो हुयो कटवाके नाक र कान जी ॥ चुगलखोर चोर दगाबाजके मै अब जी न रोऊंगी ॥ सीर० ॥ १ ॥ लिखु हाल देवर पठाण परवाना बांचर आवो जी ॥ थारो भाई खप गयो आज मत हंमसू नजर छिपावो जी ॥ आज पडो ह्यारमें भीड ह्यारो बालक साथ समावोजी॥पग-डी बदलेकी सरम आज थे जलदी चढकर आवो जी ॥ सेर ॥ येक दंम जुदा रहता नहीं मेर पिवस्युं पठान जी॥ भाई खप्यो थारो जुद्धमैं क्यूं वीसर गया थे खानजी ॥ वाजी होई मेरी मात पीवविन दुखी होरही ज्यांन जी॥बेदीन गया थे भूल हाथूंसें खीला-

ती पान जी ॥ थे भूल्या मैं बाटपियाकी जनम दूसरा जोऊंगी ॥ सीर० ॥ २ ॥ बनी बनीका सब सीरी बीगरी म कोई ये न आवह ॥ जो धान नाथकी नार हाडी जी यूं पिसतावह ॥ रामसिंघ मेरा बालक वो नहीं झगडा झेलण पावह ॥ बदस्याकी धाकस्युं सब जोधा घबरावह ॥ सेर ॥ किसमत कऱ्या ये कामनाई दोस कोई औरका ॥ क्या ठिकाणा आज उस बदस्याक सीना जोरका ॥ हुकम है तामील हिंदुस्तानम उस चोरका ॥ हो सती दूरसी सघूं जावो नास चुगली खोरका॥घहूं कहूं म किसै आजमुखदुख असवासुं धोऊंगी॥ सीर०॥३॥ लेके सीस गई बैठ चीताम सब दही ये हर हर चीना॥ वै सुरगलोकसै आगये ईश्वर गोरा रंग भीना ॥ करामातसै लोथ मंगाकर छीटा अमीरसका दीना ॥ सीवसंकरजी गोरा प्राण सरजीवन प्रीतमका कीना ॥ सेर ॥ अमर है दुनियांमैं देखो अमरसिंघका नाम जी ॥ सायर होवसो समजल्यो मूरखका कछू ये न काम जी ॥ ख्याल दोहेका गुरु मोय मिल्या गोविंद रामजी ॥ कहे उजीरोस्यो बकसजीका ध्यान आठूं याम जी ॥ हाडी कहे बीर अरजुनका मैं अब नावबी गोऊंगी ॥ सीर० ॥ ४ ॥ लावणी रामसिंघकी ॥ रंगत लंगडी ॥ काक-

जीको वैर लेणमें तखत आगरै जाऊंगो ॥ बदस्यांनै आंखसै सूरमा तणी तेग दिखलाऊंगो ॥ चोक ॥ सदा भवानी रखूं दाहनी गोरीपुत्र मनायाह ॥ सब भाई बेटा भेजकर परवाना बुलवायाह ॥ सवा लाख हुई फोज कुटंम सब जोधाई जोधा आयाह ॥ घोडूपै सलामी ले रह्या सूरवीरका जायाह ॥ सेर ॥ मुलकोंम पडती धाक हंम जोधाणपत सिर मोडकी ॥ आवन घाले हाथ ऐसी फोज हंम राठोडकी॥बादस्या नित बाद करतो बठत नित मरोडकी ॥ मेरे लिखी है हाथ विधना मोत अरजुनगोडकी ॥ ज्यूं काकजी मारचो सलावत ज्यूं अरजुननै मारुंगो ॥ बद० ॥ ॥ १ ॥ होई नगारं दोड चल्यो राठोड संग जसवंत बंका ॥ यो तोडा आगरो जैसै दशरथसुत तोडी लंका ॥ हजरतने पकडां हकाल ल्ले देर नगारेपैं डंका ॥ गयो भूल बादस्या नहिं मानी राठोडांकी संका ॥ सेर ॥ भूल्यो फिर वो बादस्या नहिं मानी ह्मांरी कांणजी ॥ काकोजी मारचो छोदगेसे एकलो सोजांणजी ॥ अब किया हथियारमै सब ल्या घरघरुसैं सांणजी ॥ तोबूकी सरलकसुणी जद आकर मिल्यो पठांणजी ॥ चल्या कुंच घर कुचकी लैक आगतं भुरु पाऊंगो ॥ बद० ॥ २ ॥ मैं परवानो

लिखकर अब बदस्याकूं चेत करायाह ॥ तूं स-
मल बादस्या तेरा लणीय्हार आगर आयाह॥गोविंद-
राम उस्ताद मुझे गाना सुरताल बतायाह ॥ स्यो
घकसरामजी ग्रहटीमें परवीन बनायाह ॥ सेर ॥ तेली
उजीरो यूं कह रस देखो मेरे ख्यालका ॥ यारुका-
हूमयार मै रे मुरसदूका बालका ॥ दुसमन मेरे कामें
उषोडनबाला हूं अब सालका ॥ नींदरा कर ह्वारी भ-
प उसकूं भवानी कालका ॥ कृपा हुई गुरवांकी ख्या-
ल म ताजा ताजा गाऊंगा ॥ ३ ॥ रामसिं
घको बादस्यासैं सेर ॥ समलस्या जा बादस्या अब
आगया राठोडजी ॥ कर चेत झेलो मोर चाल्यो
फोज सारी जोड जी ॥ अब सुरमाका हाथ देखोद्या
मुह्याणी मोड जी ॥ कित गयो वो सिंघ थारो बता
अरजुनगोड जी ॥ १ ॥ उस गोड अरजुननें
दियो मै मुलकस्युं निकाल रे ॥ गोडांटी कर-
कै ख्यालसै उसका किया बेहाल रे ॥ उन अमरसिं-
घसै दगो कर कर मारी या भोपाल रे॥जोधाणपत
छो सुरमो मेरे तखतकी ढाल रे ॥ टेर ॥ बादस्या
आय पूंच्या राठोड मोरचा झेल फोज लेवो जोड
॥ दोहा ॥ सनमुख झेलो मोरचास अब आय पूंच्या
राठोड॥ काकजीन देखएकलो थार चढ गयो जोर ॥

कित गयो मनै दिखाय देस तेरो सांवत अरजुनगोड॥ सांवत अरजुन गोड दिखादे आखस्युं ॥ नहीं उसक बदल तनै मार मै नाखस्युं ॥ बादस्या० ॥ १ ॥ टेर॥ रामसिंघ हुणहारकी बात रै नहीं रही किसीकै हाथ ॥ दोहा ॥ होणी थी सो होगईस अब सोच कन्या के होय ॥ होणी आण पडी रावणमें लंका दीनी खोय ॥ विदनाकै अंकुर कुसर मेट सकै ना कोय ॥मेट सकना कोय दगो अरजुन कियो ॥ उन नावोका ढर पागल अब म कर दीयो ॥ रामसिंघ० ॥ २ ॥ अब थे नांवो का टोपली कर राख्यो छो सेर ॥ मुंगलांकै भरमाये स्युं थे बीडो दीनो फेर ॥ अब लाज ह्मारी जात लिये विन काकजीको वैर ॥ काकजीको वैर लिये विन ना हटा॥ चाये कर ल्यो लाख उपाय कडाव्या नाडटा॥ बदस्या० ३॥ डव्या सरलो सूरमा तोर मनमें राखो आता ॥ दगो करनीया मानवी सर आखारसी ज्या पाता ॥ थे मामका ह्मे भुवांका अड-कर अपणा नाता ॥ अडकर अपणा नाता साख सह्मा लर ॥ राठोड आगर तणी हमारी ढालर ॥ रामसिंघ० ॥ ४ ॥ डाल्यो नातो तोड आप थे चोखो साख जणायो ॥ नोकूंटीको मोड हमारो थे चुगलाकन मरायो ॥ उसके बदल सेरखान पठाण

आपपर आयो ॥ आयो खान पठाण बखेडो वातम ॥ तेरी बदस्याई न गारत कर दे स्यातम ॥ बादस्या० ॥ ५ ॥ क्यूं बदस्याई गारत करता सुनो सूरमा बात ॥ जसवंतकूं दिया मालवा सजा तेरकूं गुजरात ॥ तज द्यो वैर विरोधन सथे हुकम करो दिनरात ॥ हुकम करो दिन रात बात मानो खरी ॥ तेरी लाख टका नीत चलू कर दीनो करी ॥ रामसिंघ० ॥ ६ ॥ चलू कर दीनो करी सह्मारो बदस्या मान बधायो ॥ कायम रह्यो राज दिलीका नित उठ तेज सवायो ॥ समनो तखत आगरे काये राठोडा न पायो ॥ सेरखान पठाण रांड मिटवा दई ॥ ह्मारी बदस्यासै दसतापोसी करवा दई ॥ बादस्या० ॥ ७ ॥दसतापोसी हुई रामसिंघ दाता मेल मिलाया ॥ सेरखान पठानका सह्ले दूणा मान वधाया ॥ गोविंदराम गुरु किरपा करी जदख्याल उजीर गाया ॥ तेली चतुर उजीर ख्यालक थ्यो बेस जी ॥ कर राठोडा नराजी ले ज्या देस जी ॥ रामसिंघ० ॥ ८ ॥

इति अमरसिंघहाडी रानीका ख्याल समाप्त.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण—मुंबई.

दिल्लगीकी पुडिया प्रथम भाग ... . ०—२
" द्वितीय भाग ...... ०—२
" तृतीय भाग ... ... ०—२
" चतुर्थ भाग ... . ०—२
" पंचम भाग .... ०—२
सूर्यकवच भा० टी० ... . ०—१

समस्यापूर्ति (अर्थात्) अकबरके समक्षापर कवि गंग इत्यादिक कविश्वरोंके अपूर्व कवित्त की० २ आना.

विजयशतक—जिसमें श्रीरणजीतसिंहके पुत्र दिलीपसिंह राजके विजयका अर्थात् अंग्रेजोंसे लडाई आदिका वर्णन है. । की० २ आना.

तत्वप्रदीप (जातकग्रंथ) ... . ०—४
अमरकोश भा० टी० शब्दानुक्रमणिकासह.... १—८
बृहत्प्रेतमंजरी भा० टी० ... ... ०—१०
नासिकेत भा० टी० .... ०—८
भागवत मूल बडा खुलापत्रा ... ... ५—०
लघुसिद्धांत कौमुदी भा० टी०... ... २—०
संवत्सरफलदीपिका (भाषा) ... ... ०—३
मासचिंतामणि भाषाटीका ... ... ०—३
स्वरतालसमूह (सितारका पुस्तक) .... १—८

नासिकेत भाषा (वार्तिक) ... ... ०—५

तत्त्वबोध भाषाटीका ... ... ०—२॥

भुवनदीपक भाषाटीका और संस्कृतटीका ... ०—८

विवाहविचार भाषा प्रथम भाग ... ... ०—२

चौतालचंद्रिका ... ... ०—४

राजपुत्र पूरनमलभक्तका सांगीत.... ... १—४

नरसी भक्तका ख्याल. ... ... ०—४

नृसिंहपंचासिका ... ... ०—२

श्रीबदरीनारायणशतक... ... ... ०—३

धौम्यनीति भाषाटीका ... ... ०—४

संतानगोपालस्तोत्र ... ... ०—२

हारीतसंहिता भाषाटीका... ... ... ३—०

दत्तकारुण्यलहरी (संस्कृत मूल) ... ... ०—१

राजवल्लभनिघण्टु भाषाटीका ... ... १—८

संकल्पकल्पना... ... ... ०—८

पुरंजनाख्यान भाषाटीका ... ... ०—४

पंचरत्न गीता गुटका भा०टी०.... ... १—०

ज्योतिःशास्त्रनिघण्टु ... ... ०—२

कैवल्योपनिषद् भा० टी० ... ... ०—१

दत्तकारुण्यलहरी भाषाटीका ... ... ०—३